1936F Ram Vilas

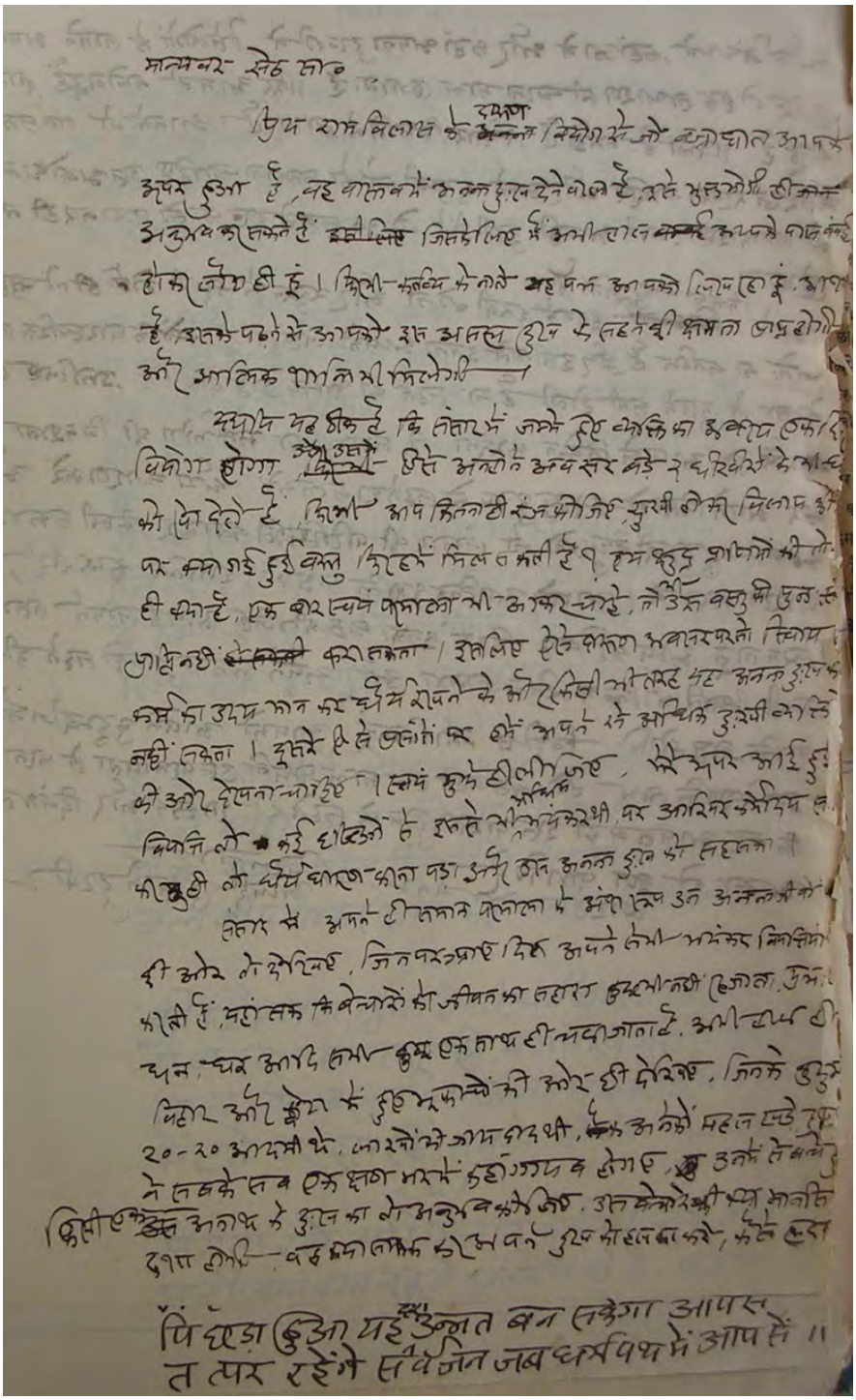

धैर्य बंधाते, कहां जाये और कहां अपना दुःख रोये. ऐसे लोगों के सामने अपना
दुःख रोना एक साधारण सी बात मान लेना है। फिर आप तो पढ़े लिखे हैं, ज्ञान-
वान् हैं, पत्नी के मर्मज्ञ हैं। संसार स्थिति को जानते हैं। आपको तो सर्व प्रकार
धीरज रखना चाहिए और अपने कुटुम्बी जनों को समझाना चाहिए, उन अबोध बच्चों
को समझाइए. यदि आप ही दुःखी होंगे, तो उन सब के दुःख का तो पारावार ही नहीं
होगा।

अपने ~~मित्रों~~ मित्र बंधुजनों के दुःख में दुःखी होना और सुख में सुखी होना ही तो सुहृद-
जनों का कर्तव्य है और इसी नाते इतना आपको लिख रहा हूं, क्योंकि पारस्परिक सम-
वेदना से दुःख में कमी होती है या सहने की शक्ति प्राप्त होती है, इसलिए एक
बार मैं पुनः आपसे निवेदन करूंगा कि संसार की [illegible] की निःसारता विचार
कर अपने चित्त से आगत दुःख को सहन करने का यत्न करें, धैर्य धारण करें और
अपने कुटुम्बी बंधुजनों को संसार की परिस्थिति बताकर किसी प्रकार धैर्य
धारण करा दें। आपको आत्मिक शान्ति प्राप्त हो, इसलिए कुछ दोहे, श्लोक
लिखता हूं. आप कई बार दिन में उनका पाठ कीजिए, आपको तत्काल संसार की
[illegible] की स्थिति का चित्र खिंच जायगा और अपने आगत दुःख को सहने की
शक्ति प्राप्त होगी. विशेष क्या लिखूं, आपको आपके कुटुम्बीजनों को
इस व्यापक शोक में [illegible] एक मात्र प्रार्थना उस परमपिता से करता हूं
कि वह आपको इस दारुण दुःख के सहने की शक्ति दे और दिवंगत
आत्मा को पूर्ण शान्ति दे।

निवेदक
आपके दुःख से दुःखी